अब सवाल उठता है, 'भगवान, अल्लाह हर जगह मौजूद है और इसलिए वह सभी जीवित प्राणियों में भी मौजूद है। क्या इसका मतलब यह है कि किसी भी पुरुष या महिला या कोई अन्य जीवित प्राणी भगवान या अल्लाह का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं?'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अगर कोई 'नहीं!' कहता है, तो वह अपने धर्म के विपरीत बोल रहा है क्योंकि वह पवित्र धर्मग्रंथों के इस बयान को स्वीकार नहीं कर रहा है कि अल्लाह, भगवान हर जगह मौजूद है और सब चीज में मौजूद है।

इसलिए जवाब बड़ा है हाँ! सतयुग वगैरा में ऐसे उदाहरण हैं जहां पत्नी ने संसारी पति को भगवान के रूप में पूजा करके दिव्य आनंद प्राप्त किया। क्योंकि पत्नी ने पति में भगवान के बारे में सोचा, वह भगवान की कृपा पाने में सफल रही। पति शाश्वत आनंद प्राप्त नहीं कर सका क्योंकि उसने कभी भी अपना दिमाग भगवान पर ध्यान केंद्रित नहीं किया। लेकिन इस युग में मायिक व्यक्ति की पूजा करना असंभव है क्योंकि भौतिक व्यक्ति कमियों से भरा है और ऐसे व्यक्तियों के व्यवहार को सीधे भगवान द्वारा नियंत्रित नहीं किया जाता है जबकि संतों को सीधे भगवान द्वारा नियंत्रित किया जाता है। सीधे भगवान द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है इसलिए संतों के फैसले सही हैं जबकि भौतिक व्यक्तियों के फैसले गलत होते हैं। ऐसा व्यवहार एक जीवित व्यक्ति में ईश्वरीय भावना नही बनने देता है। अतः इस युग में भौतिक व्यक्ति की पूजा भगवान के रूप में निषिद्ध है। मूर्तियाँ उपासक को परेशान नहीं करती हैं। इसलिए मुर्ति पूजा दिव्य आनंद प्राप्त करने के तरीके में से एक है।

इस प्रकार मूर्ति पूजा के खिलाफ कोई धर्म नहीं हो सकता। हर धर्म का कहना है कि भगवान सर्वव्यापी है, जिसका अर्थ है कि ईश्वर मुर्ति में मौजूद है और पूजाकर्ता मुर्ति में मौजूद सर्वव्यापी भगवान की पूजा कर सकता है।

लेकिन मुर्ति में व्याप्त भगवान को याद रखने पर ध्यान देना चाहिए। मुर्ति की तरह भगवान की किसी भी तस्वीर या राम, कृष्ण आदि का चित्र भगवान को याद रखने की समस्या को काफी हद तक हल करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132